अर्थ से अनर्थ भी संभवः आचार्य महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिशद् के अधिवे ान का समापन, नवीन कार्यकारिणी को दिलाई भापथ

केलवाः 7 नवंबर

तेरापंथ धर्म संघ के 11 वें अधि ाास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि व्यक्ति को अर्थ के संग्रहण से बचने का प्रयास करना चाहिए। कभी–कभी यह अर्थ व्यक्ति के लिए अनर्थ का कारण भी बन जाता है। इसके अभाव में वह अपराध के पथ पर अग्रसर होकर हिंसक भी बन सकता है। आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान सोमवार को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिशद के 45 वें अधिवे ान के समापन अवसर पर समागत युवकों और श्रावक समाज को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि गृहस्थ जीवन में व्यक्ति के लिए धन की बहुत उपयोगिता है। इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। धन है तो भूख का समाधान भी होता है और तमाम तरह के भौतिक सुख–सुविधाएं भी प्राप्त की जा सकती है, लेकिन किसी व्यक्ति के पास धन नहीं है और निर्धन है तो वह इसकी प्राप्ति के लिए गलत राह पर जाने से भी नहीं घबराता। उन्होंने एक प्रसंग प्रस्तुत करते हुए कहा कि व्यक्ति को जीवन यापन जितना धन सदैव अपने पास संग्रहित करने का प्रयास करना चाहिए। इसके अभाव में अपने भी समय आने पर पराए हो जाते है। जनता में धन के प्रति आकर्शण भी है और इससे दुख की भी प्राप्ति होती है।

आचार्यश्री ने कहा कि घर में रहते हुए अहिंसा की साधना और श्रावकता का पालन करने से आयुश का बंध होता है। इससे व्यक्ति देवलोक में तो जा सकता है, लेकिन मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। श्रावक गृहस्थ है और उसके साथ परिग्रह होता है। इससे मुक्त होने पर वि ाश्ट साधना करने की आव यकता होती है। साधना के लिए सन्यास लेना बहुत उपयोगी माना गया है। उन्होंने तेरापंथ युवक परिशद के तीन दिवसीय अधिवे ान के समापन पर युवाओं को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के समय युवाओं के इस संगठन का सूत्रपात किया गया था। आज यह समय के साथ प्रगति करते हुए वृहद रुप में फैल गया है। उन्होंने कहा कि संगठन में कार्य की क्रियान्विति के दौरान अनेक बाधाएं उत्पन्न होती है। किसी तरह की कोई दुर्घटना न हो जाए। इसलिए प्रारंभ से ही इस पर ध्यान देने की आव यकता है। युवावस्था में संघ के लिए समय निकालना महत्वपूर्ण है। यह संघ युवा गौरव और श्रेश्ठ कार्यकर्ताओं से ओतप्रोत है। अभी न ाामुक्ति का कार्य सघनता से चल रहा है। इसमें युवाओं ने काफी श्रम किया है। इसकी दूसरों को भी प्रेरणा देने

की आव यकता है। यह उपयोगी संस्था है और इसमें विनम्र कार्यकर्ता है। सेवा की उत्कंठा है। प्यास बहुत है पर काम उतना ज्यादा नहीं मिल रहा है।
मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि संघ एक भाक्ति का स्त्रोत होता है। युवा इस बात पर मनन करने का प्रयास करें कि वह कोई भी कार्य की क्रियान्विति करें तो वह योगभूत हो। कार्यकर्ता अपने दायित्व के साथ गतिविधियों को भी आगे बढाने का प्रयास करें। युवा भाक्ति किसी काम में लग जाए तो कठिन काम भी आसान हो जाता है। संघ की तेजस्विता में योगभूत, समर्पित, जीवन चारित्रवान और ज्ञान से परिपूर्ण हो। जहां युवा प्राणवान है वह संगठन मजबूत है और जहां वह निश्क्रय है वह संगठन सुसुप्त हो जाता है। मुनि योगे ाकुमार ने कहा कि तेरापंथ एक आचार्य का संघ है। उनकी दृश्टि ही हमारी सृश्टि है। युवा बंद मुट्ठी की तरह काम करते रहे। यह संगठन के लिए बेहतर है। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिशद के निवर्तमान अध्यक्ष ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष संजय खटेड को दायित्व निर्वहन का जिम्मा सौंपा। कन्हैयालाल छाजेड ने खटेड को पद एवं गोपनीयता की भापथ दिलाई। युवा गौरव एवं व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी ने अपने उद्बोधन में युवाओं को लगन और मेहनत से कार्य करने की बात कही। आभार की रस्म केलवा मंडल मंत्री लक्की कोठारी ने अदा की। संयोजन रमे ा सुतरिया ने किया।